# नमिता सिंह का कथा साहित्य

## पितृसत्तात्मक समाज का स्वरूप

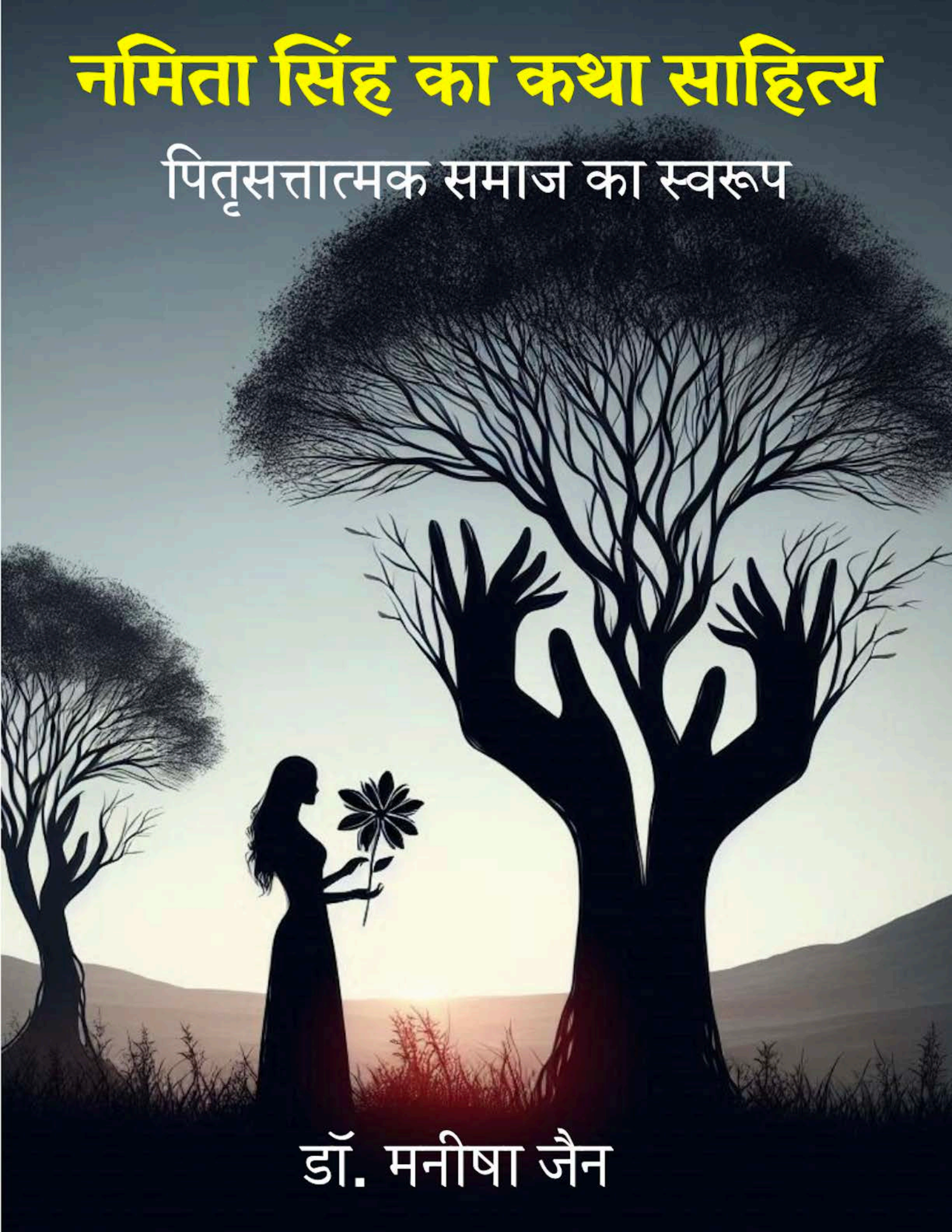

डॉ. मनीषा जैन

# नमिता सिंह का कथा साहित्य

## पितृसत्तात्मक समाज का स्वरूप

**डॉ. मनीषा जैन**

*प्रकाशक: नॉटनल*

*प्रकाशन: अक्टूबर, 2024*

*© डॉ. मनीषा जैन*

# अनुक्रम


भूमिका 4

पितृसत्ता की अवधारणा 9

नमिता सिंह का रचना संसार 26

व्यक्तित्व व साहित्य सृजन

नमिता सिंह का स्त्री संबंधी दृष्टिकोण

नमिता सिंह की कहानियों में अभिव्यक्त पितृसत्ता और प्रतिरोध का स्वर 158

कहानियों में अभिव्यक्त पितृसत्ता के विभिन्न रूपों का अध्ययन

नमिता सिंह की कहानियों में व्यक्त सामाजिक यथार्थ

कहानियों में स्त्री की बदलती मानसिकता और पितृसत्ता का विरोध

नमिता सिंह के उपन्यासों में भारतीय समाज 262

नमिता सिंह के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक यथार्थ

नमिता सिंह के उपन्यासों में व्यक्त सांप्रदायिकता विरोधी स्वर

नमिता सिंह के उपन्यासों में निहित स्त्री प्रश्न

नमिता सिंह के कथा साहित्य की भाषा और शिल्प 427

कथा शिल्प

भाषिक संरचना

उपसंहार 507

नमिता सिंह से एक साक्षात्कार 521

संदर्भ ग्रंथ सूची 537

# भूमिका

पितृसत्ता एक मानसिकता है। भारतीय समाज में इस मानसिकता के संस्कार बच्चों में विकसित किए जाते हैं। पितृसत्ता के तहत एक विचारधारा प्रभावी रहती है कि पुरुष स्त्रियों से श्रेष्ठ हैं। तथा महिलाओं पर पुरुषों का नियंत्रण रहना चाहिए। अत: महिलाओं को पुरुषों की संपत्ति के रुप में देखा जाता है। असल में आज भी पुरुष प्रभुत्व तथा पूंजीवाद, ये दो रिश्ते, जो नारी दमन या पितृसत्ता को निर्धारित करते हैं। पितृसत्ता (शक्ति) वह लिंगीय व्यवस्था है जिसमें पुरुष के पास अहम् सत्ता तथा आर्थिक विशेषाधिकार होते हैं। असल में पितृसत्ता के विरोध का लक्ष्य वर्चस्वहीन समाज की स्थापना है। और जब तक स्त्रियों को सामाजिक उत्पादन के काम से अलग और केवल घर के निजी कामों में बिना आर्थिक सहयोग के रखा जायेगा तब तक स्त्रियों का पुरुषों के साथ बराबरी का हक़ पाना असंभव है और असंभव ही रहेगा।

स्त्री पराधीनता के मुद्दों पर जब तक धार्मिक व्यवस्थाओं तथा मान्यताओं, मानसिकता पर सवाल नहीं उठाए जायेंगे मात्र स्त्री बनाम पुरुष की अवधारणा हमारे दृष्टिकोण को संकुचित करती है। अत: स्त्रियों की आत्मनिर्भरता तथा आर्थिक, सामाजिक सुरक्षा के प्रश्नों को मुख्य धारा में लाने की आवश्यकता है। यह पुस्तक वरिष्ठ साहित्यकार नमिता सिंह के कथा साहित्य को विश्लेषित व विवेचित करने के

उद्देश्य से लिखी गई है। नमिता सिंह की कहानियों में पितृसत्ता के स्वरुप के साथ-साथ उस वृहत्तर समाज की कहानियां हैं जो समाज उनके सामने से गुजरा है। गहरी संवेदनात्मक बौद्धिक बहस व सत्य के धरातल से परिपूर्ण उनकी कहानियां कोरी भावुकता से अलग स्त्री चेतना को विकसित कर संघर्ष करती हैं। उनमें हताशा, निराशा नहीं बल्कि चुनौतियों को स्वीकार करने की इच्छाशक्ति के साथ नई राह पर चलने के लिए उद्दत होती हैं।

नमिता सिंह की कहानियों में व्याप्त मानसिकता कि स्त्री की व्यक्ति के रुप में स्वीकृति तथा समानता व अस्तित्व की आकांक्षी स्त्री को पुरुष का वर्चस्व स्वीकार नहीं है। वह बराबरी, सम्मान व समान अधिकार, स्वतंत्रता तथा न्याय के लिए पुरुष के वर्चस्व का विरोध करती है। इनके स्त्रीपात्र पितृसत्ता की मानसिकता का विरोध करते हुए जीवन में नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार दिखाई देते हैं।

नमिता सिंह के उपन्यासों में आज के बदलते हुए सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ समाज के भीतर छिपे मानव विरोधी जातिप्रथा से लैस दकियानुसी सोच व सामाजिक विडम्बनाओं के चित्र तो हैं ही, साथ ही यह भी पता चलता है कि सांप्रदायिकता के पीछे कितने लोगों, राजनीतिक षडयंत्रों, कट्टरता तथा अफवाहों के कारण जनजीवन अस्तव्यस्त होता है। क्योंकि ये सब मानवता विरोधी गतिविधियां हैं।

प्रस्तुत पुस्तक नमिता सिंह के कथा साहित्य में पितृसत्ता की अवधारणा तथा उनके उपन्यास व कहानियों के माध्यम से समाज व परिवार में अभिव्यक्त पितृसत्ता के विभिन्न रूपों तथा पात्रों के प्रतिरोध के स्वर को चिन्हित किया गया है। नमिता सिंह के कथा साहित्य में भारतीय समाज के विभिन्न रूपों व समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता के साथ ही स्त्री प्रश्नों को चिन्हित व विवेचित किया गया है। अत: नमिता सिंह के उपन्यासों व कहानी संग्रहों को आधार बनाकर उनमें पितृसत्तात्मक तत्वों की खोज कर विश्लेषित किया गया।

प्रथम अध्याय 'पितृसत्ता की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है कि पितृसत्ता क्या है। दूसरा अध्याय नमिता सिंह के रचना संसार तथा उनके स्त्री संबंधी दृष्टिकोण पर केंद्रित है। तीसरा अध्याय नमिता सिंह की कहानियों में अभिव्यक्त पितृसत्ता और प्रतिरोध के स्वर के स्वर पर केंद्रित है। इस अध्याय में नमिता सिंह की कहानियों में व्यक्त हुए पितृसत्ता के विभिन्न रुपों के विश्लेण के साथ-साथ यह भी स्पष्ट किया गया है कि उनकी कहानियों के पात्रों में पितृसत्ता की मानसिकता कैसे काम करती है और कहानियों के स्त्री पात्रों की मानिसकता पितृसत्ता के विरोध में किस तरह बदलती है इसका मूल्याकंन किया गया है। चौथा अध्याय नमिता सिंह के उपन्यासों में भारतीय समाज पर केंद्रित है। इस अध्याय में उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक यथार्थ के साथ-साथ सांप्रदायिकता का विस्तार से विवेचन के साथ ही उनके उपन्यासों में व्यक्त